व्याख्यान द्वारा :-

डॉ० मंजू शुक्ला [Asst. Professor]
हिन्दी संकाय
नेहरू ग्राम भारती (मानित)
विश्वविद्यालय प्रयागराज उ०प्र०

-: समकालीन कविता और उसकी विशेषताएं :-

'समकालीन' शब्द अंग्रेजी के 'contemporary' का पर्याय और 'समसामयिक' शब्द का बोधक है। इससे प्रतीत होता है कि 'समकालीन कविता' समसामयिक सन्दर्भों से सम्बद्ध है, साथ ही इसे युग विशेष के अनुसार बदली हुई चेतना और मानसिकता का द्योतक है। सन् 1962 ई. में चीन के हाथों भारत के पराजित होने के कारण हमारे कुछ जीवियों तथा साहित्यकारों का व्यामोह भंग हो उठा और विद्रोही स्वर उभरा। जिसमे राजनेताओं की निन्दा की जाने लगी, यही स्वर समकालीन कविता की संज्ञा पा गया।

समकालीन कविता मे वर्तमान का सीधा खुलासा है, इसे पढ़कर वर्तमान काल का यथार्थ बोध हो जाता है। समकालीन हिन्दी कविता की प्रमुख-प्रमुख प्रवृत्तियों का अनुशीलन इस प्रकार किया जा सकता है:

1- परम्परागत तत्वों तथा धारणाओं का परित्याग :-

इन कवियों ने धर्म, जाति, समाज, राष्ट्र संस्कृति एवं नैतिकता से सम्बन्धित प्रायः सभी परम्परागत तत्वों, धारणाओं तथा मूल्यों को अस्वीकार किया है। फलतः उन्होंने कही ईश्वर का मजाक उड़ाया है तो कहीं धर्म समाज और नैतिकता के परम्परागत मूल्यों की खिल्ली उड़ायी है। इन्होने राष्ट्रीय गौरव, राष्ट्रभक्ति तथा देश-प्रेम की निन्दा की है तथा देश-प्रेमकी निन्दा की है तथा देश-प्रेम को 'एक ऐय्याशी का दिया हुआ महामंत्र' घोषित किया है —

उदाहरणस्वरूप-

1. "बच्चा था तो पिता नाम का जन्तु बाहर निकलने पर रोक लगाता था।"
2. "हिन्दुस्तान तुम उस कपटी की औलाद हो जिसने हमेशा विभीषण और जयचन्द पैदा किये है।"

काम का उन्मुक्त अंकन →

इन कवियों ने भोगवाद, नग्न यौनाचार तथा अस्वाभाविक काम प्रयासों का निरूपण किया है। भारतीय संस्कृति के चतुवर्गों में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले 'काम' को केवल पाशवि उपयोग तक सीमित माना है। इन्होंने अपनी वासनाओं की तृप्ति के लिए न केवल नारी को उपभोग्य घोषित किया है, अपितु पशु-पक्षियों के साथ भी अप्राकृतिक सम्बन्ध स्थापित करने में किंचित संकोच नहीं किया है। कवियों द्वारा तो अश्लील और फूहड़ उक्तियाँ कही ही गयी हैं कवयित्रियों ने भी अश्लीलता और नग्नता का निर्लज्जता पूर्ण अंकन किया है — उदाहरणस्वरूप -

सुबह होने से लेकर दिन डूबने तक
मैं इन्तजार करती हूँ रात का.
जब हम दोनों एक ही कोने में सिमट कर----

चाहे जो हो, इस प्रकार के गर्हित चित्रण न तो समाज के लिए कल्याणकारी है और न साहित्य के लिए। मात्र भोगवाद पर टिका हुआ कोई भी चिन्तन अधिक दिन तक स्थायी नहीं रह पाता है और यही कारण रहा कि यह प्रवृत्ति भी जल्दी दम तोड़ गयी।

3. वर्तमान विषमताओं का अंकन →

भारत वर्ष को स्वतंत्र हुए एक लम्बी अवधि बीत चुकी थी समाजवाद के स्थापना की उद्घोषणा बार-बार हो चुकी थी फिर भी सत्य यह है कि गरीब, तथा अमीर आदमी अमीर होता जा रहा है। विभिन्न सरकारी योजनाओं तथा आन्दोलनों के बाद भी आम आदमी की रोटी, कपड़ा और मकान की अनिवार्य आवश्यकताओं की आपूर्ति नहीं हो पा रही है।

उदाहरण स्वरूप -

"भूख से मरा हुआ आदमी
इस मौसम का
सबसे दिनचस्प विज्ञापन है और शायद
सबसे सटीक नारा," (धूमिल)

4- आधुनिक जनतंत्र पर आक्षेप → सैद्धान्तिक रूप में जनतंत्र जनता का तंत्र है जो जनता के लिए शासन करना है किंतु व्यवहारिक स्थिति इसके प्रतिकूल है। लोकतंत्रीय खामियों के कारण एक विशेष वर्ग अपनी प्रभुत्वसत्ता के बल पर जन तंत्र की सम्पूर्ण शक्तियों को निगल जाता है। फलतः भारतीय नेताओं का समाजवाद एक ढ़ग बनकर रह गया है। इन कवियों ने जनतंत्र और समाजवाद की हँसी उड़ायी है। उदाहरणार्थ-

(क) "उसको समझा दिया गया है कि
यहाँ ऐसा जनतंत्र है, जिसमें जिन्दा रहने के लिए
घोड़े और घास को एक जैसी छुट है
कैसी विडंबना है, कैसा झूठ है।"

5. जीवन की विद्रुपदाओं का विश्लेषण एवं उद्घाटन → इन कवियों ने समकालीन जीवन के पारिवारिक, सामाजिक आर्थिक, नैतिक, राजनीतिक इत्यादि आयामों में व्याप्त विषमाताओं तथा विद्रुपदाओं का विश्लेषण तथा उद्घाटन किया है।

उदाहरण स्वरूप-

आप भी एक वार चलाएँ।
मैं भी एक वार चलाऊ।
आप करें मेरी आलोचना।
मै करूँ, आपकी आलोचना।
इसी बीच, कुछ समालोचक पैदा हो जायेंगे।
इस कशमकश में, हम दोनों हिट हो जायेंगे।"

6- अभिव्यक्ति की स्वाभाविकता → इन कवियों ने पूर्ववर्ती कवियों की तरह भाषा में अलंकार, बिम्ब, प्रतीक, उपमान

आदि का अत्यधिक प्रयोग नहीं किया है। समसामयिक कविता के कवि बेझिझक, निःसंकोच, सपाटबयानी के पक्षधर हैं, उनकी अभिव्यक्तियाँ बेलौस तथा निर्भय है।

उदाहरणार्थ→

"बाबू जी! सच कहूँ-मेरी निगाह में
न कोई छोटा है
न कोई बड़ा है
मेरे लिए, हर आदमी एक जोड़ी जूता है ...

7- **आत्मसंघर्ष का भाव**→ भविष्य के प्रति अनिश्चितता संकटमय अस्तित्व स्वाभाविक रूप से आत्मसंघर्ष का संकेत देते हैं। सन 1960 के पश्चात सामाजिक राजनीतिक तथा आर्थिक क्षेत्र में बढ़ती हुई विसंगतियाँ क्षरण होते हुए मानव मूल्य इत्यादि आज के युवा पीढ़ी को दिग्भ्रमित कर उनके विकास में अवरोधस्वरूप है। एक तरफ बेकारी तथा दूसरी तरफ भ्रष्टाचार, ऐसी स्थिति में दायित्वों का निर्वहन संभव नहीं फलतः आत्मसंघर्ष को बढ़ावा मिलता है। आज का युवा इसी छटपटाहट में जीवन के सुनहरे पल को गँवाता जा रहा है।

उदाहरणार्थ→

"असल में मेरे कन्धे दुःख रहे हैं
और असल में मैं एक खम्भे से दूसरे खम्भे तक
अपने हिस्से का आसमान
ढोते-ढोते थक गया हूँ।" (केदारनाथ सिंह)

समकालीन हिन्दी कविता की सम्पूर्ण विशेषताओं के विवेचनों के उपरान्त कहा जा सकता है कि यह कविता अपने युग के सत्य का साक्षात्कार करने वाली कविता है। विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने लिखा है-"साठ के बाद के कवियों ने छायावादी रोमांटिक संस्कारों से अपने को मुक्त करने का प्रयास किया है।